मुक्ति कारवां बुलेटिन-28 सितंबर, 2018

दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा संगठित अपराध है बाल दुर्व्यापार

- मुक्ति कारवां का दुमका में भव्य स्वागत
- डालसा सचिव ने मुक्ति कारवां अभियान को सराहा
- लोगों से भी अपनी भूमिका निभाने का किया अनुरोध

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जामा, दुमका की छात्राओं ने मुक्ति कारवां टीम का अपने विद्यालय परिसर में भव्य स्वागत किया। 10वीं की छात्रा प्रियंका कुमारी एवं अन्य छात्राओं ने सर्वप्रथम ड्रम बजाते हुए मुक्ति कारवां के सदस्यों को अपने विद्यालय परिसर ले गईं और बुके देकर उनका स्वागत करते हुए स्वागत गीत गाया-

ऐसा पावन सुहावन सवेरा आज है।
आप आए अतिथियों के सरताज हैं।
मन की वीणा से गुंजित ध्वनि मंगलम्।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।

यहां पर आयोजित कार्यक्रम में विषय प्रवेश कराते हुए मुक्ति कारवां के प्रदेश समन्वयक अर्जुन कुमार ने कहा कि बाल दुर्व्यापार (ट्रैफिकिंग) दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा संगठित अपराध है। सिर्फ दिल्ली में ही घरेलू कामकाज कराने को लेकर इसके लिए 240 प्लेसमेंट एजेंसी चिन्हित हैं। जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी प्रकाश चंद्र ने बच्चियों से कहा कि जिला बाल कल्याण समिति में 5 लोग होते हैं, अगर आप सब को कोई दिक्कत और मदद की जरूरत हो तो आप उनसे संपर्क करें। जिस बच्चे के अभिभावक नहीं हैं, उन्हें सरकार 2000 रुपये प्रत्येक महीने के हिसाब से तीन साल तक मदद देती है, ताकि उस बच्चे की परवरिश हो सके।

गांधी मैदान चौक दुमका में मुक्ति कारवां टीम द्वारा बाल दुर्व्यापार के खिलाफ सजग रहने को प्रेरित किया गया और लोकगीत और नाटक द्वारा लोगों को सचेत किया गया-

'दिने दिने बढल जाता बाल व्यापार हो।
सबसे निवेदन हमार बन होशियार हो।
जिला से दूर कर सब दुराचार हो।
सबसे निवेदन हमार बन होशियार हो।'

यह गीत गाते हुए मुक्ति कारवां की टोली जहां भी पहुंचती है, लोगों का झुंड साथ हो जाता है। 10 प्लस टू राजकीय कन्या विद्यालय दुमका में आयोजित कार्यक्रम को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव निशांत कुमार, पुलिस अनुमंडल पदाधिकारी पूज्य प्रकाश, श्रम अधीक्षक संजय आनंद, मुक्ति कारवां के राज्य संयोजक शत्रुघन ओझा, समन्वयक अर्जुन कुमार, सदस्य शांति किंडो, राजा दुबे, रेड क्रॉस सोसायटी दुमका के सचिव अमरेंद्र कुमार यादव, अभ्युदय संस्था की शकुंतला दुबे, प्रयत्न फाउंडेशन के सचिव सुनील कुमार साहा एवं विद्यालय की छात्रा शालिया फरहत ने भी संबोधित किया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव निशांत कुमार ने लोगों से अपील की कि साक्ष्य के अभाव में भी आरोपी कभी-कभी छूट जाते हैं, इसलिए आप सब एक सार्थक भागीदार बने। अगर कोई घटना घटती है, तो आप भी अपनी जिम्मेवारी निभाएं। जब अनुसंधान चलता है तो ना सिर्फ पुलिस की मदद करें बल्कि

न्यायालय में भी समय पर उपस्थित हों। हम सबके प्रयास से ही दुराचार रुक सकता है, नहीं तो फाउंडेशन द्वारा किया जा रहा प्रयास सफल नहीं होगा। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए शालिया फरहत ने कहा कि झारखंड की कोई बेटी सुरक्षित नहीं महसूस कर रही है। सिर्फ दो रोटी के बदले उनका अमानवीय शोषण हो रहा है, ऐसी स्थिति से हमें कब मुक्ति मिलेगी।

दुमका, झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक शिबू सोरेन का कर्मक्षेत्र रहा है। वह यहां से वर्षों से सांसद हैं। झारखंड बनने के बाद दुमका को झारखंड की दूसरी राजधानी होने का गौरव भी हासिल है, लेकिन उसी दुमका में बाल दुर्व्यापार और बाल श्रम पर लगाम नहीं लग पाया है।

मुक्ति कारवां

मुक्ति कारवां एक सचल दस्ता है, जो गांव-गांव में घूमकर बाल दुर्व्यापार बाल मजदूरी और यौन शोषण जैसी बुराइयों के खिलाफ जन-जागरुकता फैलाने का काम करता है। इस दस्ते में करीब 10 से 15 नौजवान होते हैं, जो ज्यादातर बाल दुर्व्यापार और बाल मजदूरी से मुक्त कराए हुए होते हैं। ये नौजवान नुक्कड़ नाटक, दीवार लेखन, जन जागरण की छोटी-छोटी बैठकों और सभाओं के जरिए बच्चों की खरीद-फरोख्त के कारोबार, बच्चों के यौन शोषण उसे रोकने के उपाय और कानूनों के बारे में लोगों को जागरूक करते हैं। मुक्ति कारवां अभियान 1997 से शुरू होकर बाल दुर्व्यापार बहुल राज्यों में भ्रमण करते हुए अब तक 4 लाख किलोमीटर की यात्रा तय कर लाखों लोगों को बाल दुर्व्यापार के खिलाफ जागरूक कर चुका है।